नीरजा माधव के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

सुनील कुमार यादव (शोधछात्र),
हिंदी विभाग,
महाराजा सयाजीराव वि.वि. वडोदरा, गुजरात

विश्व और समाज में स्त्री के बहुत सारे रूप मिलते हैं । कभी माता है, कभी बहन, कभी पत्नी, तो कभी सहेली है । कभी-कभी स्त्री किसी संस्थान में काम-काजी महिला की तरह दिखाई देती है । विभिन्न कारणों से उसमें अपने वर्ग के प्रति नारी चेतना व शोषण के खिलाफ आवाज बुलंद होने लगी है । यही चेतना अब अस्सी के दसक के बाद हिन्दी साहित्य मे भी दिखाई देती है । स्त्रियों की संघर्ष करने की मानसिकता को लेखिका ने अपने उपन्यासों में विभिन्न पात्रो के माध्यम से उद्घाटित करने का प्रयास किया है।

राष्ट्रपति माननीय रामनाथ कोविंद के हाथों सर्वोच्च महिला नागरिक सम्मान 'नारी शक्ति पुरस्कार' (2020- 21) प्राप्त करने वाली प्रगतिवादी लेखिका डॉ नीरजा माधव का नाम हिंदी साहित्य में किसी परिचय का मोहताज नहीं है । नीरजा जी मेरे प्रिय रचनाकारों में ऐसी ही एक लेखिका हैं, जिन्होंने अपने साहित्य रचना कर्म के माध्यम से एक बड़े पाठक वर्ग में आत्मीय रिश्ता बनाया है । डॉ. नीरजा माधव के स्त्री पात्रों का जीवन स्वाभिमान और आत्मविश्वास के साथ निरूपित किया गया है । उनके कथा साहित्य में स्त्रियाँ नारीत्व एवं सांस्कृतिक मूल्यों के साथ सबल हैं । इनके साहित्य की स्त्रियां भारतीय संस्कृति की पक्षधर हैं जो कि पाश्चात्य विचारों से अलग हैं । पाश्चात्य विचारों में स्त्री अपने शोषण के खिलाफ अकेले रहकर सिर्फ अपने हित को सर्वोपरि रखती है । भारतीय संस्कृति में स्त्री के हक और अधिकार की लड़ाई मे भारतीय स्त्री के साथ परिवार भी होता है । जबकि विदेशी सभ्यता में परिवार को बंधन मानते हैं । नीरजा जी के साहित्य में स्त्री विरोधी मान्यताओं का प्रतिकार है तो उसके साथ खुले विचारों का स्वागत भी है । वे समाज की स्त्रियों के पित्रसत्तात्मक संस्कार से दूषित मानसिकता को उद्घाटित करती है । इनके साहित्य में नारीवाद एक स्वस्थ भारतीय दृष्टिकोण से उभर कर सामने आता है ।

लेख का विस्तार –

वर्तमान समय आधुनिकता का अनुयायी है । इसी आधुनिकता के एवज में मानवीय व सामाजिक मूल्यों में लगातार गिरावट देखने को मिलती है । भारत की संस्कृति पुरुष प्रधान है । इसी कारण नारी को प्राचीन काल से लेकर आज तक दूसरे दर्जे का माना जाता है । नारी चेतना के संदर्भ में साहित्य भी अपना योगदान दे रहा है । हिंदी गद्य साहित्य में लेखिकाओ ने भी अपने अस्तित्व अधिकारों को लेकर आवाज उठाई है । भले ही वह प्रयास अल्प हो फिर भी वह परिवर्तन के लिए प्रयास करती है । डॉ नीरजा माधव द्वारा रचित साहित्य में भी इस पीड़ा, संत्रास व अन्याय के विरोध की प्रवृत्ति दिखाई देती है । लेखिका अपने उपन्यासों में नारी जीवन की तमाम चुनौतियों को प्रतिबिंबित करती है । वह चाहे मानवी हो, भवप्रीता हो, मीना हो या अन्य कोई स्त्री पात्र।

'तेभ्य:स्वधा' उपन्यास में डॉ. नीरजा माधव ने 1947 भारत पाक विभाजन के समय नारियों पर होने वाली प्रताड़ना को दिखाने का प्रयास किया है । नायिका मीना शुक्ला जो कि सांप्रदायिक हिंसा के बाद उसे पाकिस्तानी कबायिली उठा ले जाते हैं । उनका सरदार साफ़ी खान उसके साथ बलात्कार करता है और उसे अपनी पत्नी बनाकर घर में बंद रखता है । बहुत समय बीत जाने पर कई बार भागने के प्रयास में मीना बार – बार पकड़ी जाती है और प्रताड़ित होती है । जब उसे बच्चा हो जाता है । तो वह बच्चे के मोह में पड़ जाती है, वह अपने बच्चे को एक आहूति की तरह पालती है । पाकिस्तान के हिंसात्मक कार्य के बदले में अपने बच्चे को हथियार बनाती है । वह अपने बच्चे से 'गया' में तर्पण करवाने आती है । वह कबायली हमले में मारे गए माता-पिता, भाई और

अन्य लोगों का एक साथ तर्पण करवाती है । मीना धर्म की रक्षा करती है, देशभक्त और एक मजबूत स्त्री भी है । वह अपने बच्चे को उचित समय आने पर बताती है कि-

" मैं तुम्हारी माँ मीना, जिसे तुम्हारे पिता ने बलात् अमीना बना दिया और इसलिए तुम्हें अपने रक्त और मज्जा से निर्मित करके भी तुम्हें कभी अजीज हुसैन नहीं माना बल्कि शुक्ल ही मानती रही- इस विश्वास से की माँ का पक्ष तुम्हारे अंदर प्रबल होना ही चाहिए " [1]

उसे अपने अजन्मे बच्चे के अस्तित्व में स्वयं का अस्तित्व दिखाई देता है । मीना को साफी खान भले ही अपनी पत्नी बनाकर रखता था, परंतु वह वहाँ से भाग जाना चाहती है । मीना अपनी स्वतंत्रता के लिए लगातार साफी खान से लड़ती रहती थी, वह साफी खान से निडर होकर कहती है कि "इतनी ही नेकदिली है तो क्यों मार डाला इतने बेकसूर लोगों को ? मेरे अम्मा- बाबूजी को ..... , मुझे क्यों नहीं मारते ? चलाओ गोली ! जब मेरा कोई नहीं बचा तो मैं क्या करूंगी जीकर ? उस तरह की जिल्लत की जिंदगी मैं जी नहीं सकती ।" [2]

डॉ. नीरजा माधव ने मीना का चरित्र समाज में संघर्ष करने वाली स्त्रियों के लिए एक आदर्श की तरह दिखाया है, जो कि विषम परिस्थिति में भी अपने अस्तित्व का समर्पण नहीं करती है । डॉ. नीरजा माधवजी अपने उपन्यास के चरित्र के माध्यम से पितृसत्तात्मक समाज को बताती हैं कि जब अज्जू कहता है कि औरतें कमजोर होती है तब मीना अपने बेटे को बताती है कि "नहीं अज्जू ! एक से एक औरतें हैं जो इस तरह के युद्ध या छद्म युद्धों में बढ़-चढ़कर भाग लेती हैं । पुरुषों के भी कान काट ले अपनी बर्बरता से । दिल कभी कमजोर नहीं होता किसी- किसी में करुणा की मात्रा अधिक होती है, तो किसी ने क्रूरता की ! बस्स "[3]

नीरजा जी के उपन्यास 'अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी' में पुलिस कांस्टेबल भवप्रीता आर्या जो कि दलित महिला है । नारी समाज जहाँ एक तरफ पुरुषवादी मानसिकता से परेशान है वहीं दूसरी तरफ जाति व वर्ग की भिन्नता उसके लिए नासूर की तरह है । भवप्रीता अपनी डायरी में लिखते हुए सोचती है कि मेरी शिक्षा अच्छे से हुई थी, परंतु दलित होने की वजह से मेरी शादी एक शादी-शुदा से कर दी गई क्योंकि नारी की इच्छा- अनिच्छा का कोई सम्मान नहीं रखता है । भवप्रीता कहती है कि "पुरुष समझौता भी करता है तो स्त्री की ही कीमत पर, स्त्री अवर्ण हो या सवर्ण, दाव पर उसे ही लगना है । उसी रात मैंने पहली बार अपने को अवर्ण माना अघर और अछूत माना, दलित और शोषित माना । स्त्रियों की कोई जाति नहीं होती का फलसफा उसी रात समझा मैंने ।"[4]

भवप्रीता की शादी रामबली के साथ हुई थी, जिसकी पहले से ही एक पत्नी थी शादी के बाद पहली रात भवप्रीता के पास रामबली आकर कहता है कि आज रात में उसके साथ रहूंगा नहीं तो वह पुलिस विभाग में शिकायत कर देगी, मेरी नौकरी चली जाएगी । रामबली अपनी नौकरी भी बचा लेता है और दो शादी भी करता है, समझौता तो दोनों महिलाओं को करना पड़ता है । प्रस्तुत उपन्यास में भवप्रीता के माध्यम से लेखिका ने दलित समाज की गांव की लड़कियों की दशा का प्रतिनिधित्व किया है । वह लिखती है कि " बड़ी- बड़ा के घर लड़कियां पढ़े । उनका बियाह — दान देर से होता है जैसे रुपये की कमी नहीं होती । हमा — सुबा पढ़ा देगे तो किस घर भेजेंगे ? दान- दहेज की आफत अलग । फिर पढ़ी -लिखी लड़की दूसरे घर जाकर लवनी —बिनिया करेगी क्या ? मार के दूसरे दिन ही सब बहरिया देंगे ।"[5]

यह नायिका प्रधान उपन्यास है जो कि भूतकाल , वर्तमान की स्त्री व दलित के चिंतन लेकर लिखा गया है । इस उपन्यास में नीरजाजी ने नारियों के चिंतन में आजादी के बाद देश में नारियों पर पित्रसत्तात्मक सोच की समीक्षा की है । और अपने साहित्य में स्त्रियों के संघर्ष को प्रेरणा दी है ।

डॉ. नीरजा माधव जी ने यमदीप उपन्यास में मानवी का चरित्र आधुनिक समय की आदर्श स्त्री के रूप में गढ़ा है । मानवी की परिस्थितियाँ सामान्य स्त्री जैसी ही है, वाराणसी शहर में रहकर मानवी एक अखबार की पत्रकार है । उसके पास गांव का गुंडा हरेंद्र आता है, वह उसे अखबार में ऐसी खबर छापने को कहता है जिससे कि शहर में सांप्रदायिक हिंसा होने की संभावना होती है तब मानवी उससे प्रतिरोध करते हुए कहती है कि

" तुम मुझे ब्लैकमेल करना चाह रहे हो ? मानवी ने दाँत पीसते हुए कहा ।

"ब्लैक नही ,बस मेल करना चाह रहा हूँ । आज भी मै ....

"शट अप एंड गेट आउट । तुमने हिम्मत कैसे की ? " [6]

मानवी स्त्री होकर भी अराजक तत्वों से डरने वाली नहीं है । नीरजा माधव की 'तेभ्य:स्वधा' उपन्यास की नायिका मीना की तरह मानवी देशभक्त स्त्री है । वह सांप्रदायिक हिंसा की खबर छापने से मना करती है, तो हरेंद्र

उसके साथ हाथापाई करता है । इस घटना के बाद मानवी को एक 'पुलिसकर्मी देवता पांडे' अंगरक्षक के रूप में मिल जाता है, परंतु पुरुषवादी मानसिकता वाले समाज में रक्षक ही भक्षक बन जाता है । मानवी के साथ दोनों पुरुषों ने हरेंद्र व देवता पांडे के दुर्व्यवहार के बाद बहुत खिन्न हो जाती है । उसे पुरुषों में असुर के गुण दिखाई देते हैं । मानवी स्त्रियों के अस्तित्व को लेकर पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर तीखा सवाल उठाती है वह कहती है कि-

"आज उसे अपनी असहायता पर और हीनता व्याप रही थी । क्यों किसी महिला को स्वाभिमान के साथ जीने का कोई अधिकार नहीं ? हर जगह भेड़िए । कहां सुरक्षित महसूस करे वह ?" [7]

मानवी द्वारा कही गई यह बात पित्तृसत्ता के खिलाफ एक प्रतिकार है, जो कि हर स्त्री का यह प्रश्न अपने परिवार से, समाज के परुषवादी मानसिकता से है । मैत्रेयी पुष्पा कहती हैं कि स्त्रियों के प्रतिकार का यह स्वर ही स्त्री की लड़ाई है । " यह अपनी शक्ति को पहचानने की लड़ाई है । यह भारत की ग्रामीण जीवन पर घूंघट के भीतर दहकती आखों की लड़ाई है जो सड़ी –गली मान्यताओ को भस्म कर देना चाहती है । साथ ही नैतिकता के पाखंडो को तोड़ती हुई नैतिकता की नई जमीन बनाकर नजर आती है ।

नारियाँ पुरुषों के बनाए हुए समाज में वह स्थान नहीं प्राप्त कर पाई हैं, जो कि उसका अधिकार है । एक स्त्री की जीवन गाथा को देखें तो वह पृथ्वी की तरह धैर्य रखकर परिवार व समाज के केंद्र में रहती है । जैसे मानसी अपनी माताजी के जीवन संघर्ष को याद करती है कि-

"कितनी बंटी –बंटी सी है अम्मा ! उधर बाबूजी, भइया, इधर वह और जेल में मधुकर । सभी को समेटने में कितनी बिखर रही है अम्मा ? कौन जान सका उनकी पीड़ा ? किसने गिने उनके हृदय के फफोले ? कहाँ है नारी की वह परम पदवी जिसे पाने के बाद वह धरती हो जाती है ? ..... शून्यगर्भा धरती । जब तक धरती नहीं, तब तक एक वस्तु है नारी, जिसे हर व्यक्ति अपने- अपने तराजू में अपने ढंग से तौलता है । पुत्री है तो उसे पिता के पल्ले में ठीक होना चाहिए, बहन का भाई के, पत्नी को पति के और स्त्री के रूप में पुरुष वर्ग का अपना मानक है । यानी वस्तु से धरती में परिवर्तन होने का नाम है नारी ।"[9]

इस प्रकार नीरजा माधवजी ने अपने उपन्यासो में नारी पर होनेवाले अत्याचारों और त्रासदी पर प्रतिकार पर प्रकाश डाला है । उनके नारी पात्र शोषण पर आवाज उठाते भी दिखाई देते है । नीरजाजी ने उपन्यासों में आधुनिक काल की नारी जीवन की समस्याओं को उजागर किया है । उन्होंने अपने साहित्य में वह विषयों को लेकर लेखन किया है जो आजतक हिन्दी साहित्य में अनछुए ही रहे । लेखिकाने पाश्चात्य विचारों का अन्धा अनुकरण न कर के भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्त्रीयों के पक्ष में चिंतन किया है । नीरजाजी ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज को स्त्री विमर्श की एक नई राह दिखाई है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूचि :

1. तेभ्य:स्वधा, नीरजा माधव, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2004, पृष्ठ. 13
2. वही, पृष्ठ. 55-56
3. वही, पृष्ठ. 87
4. अवर्ण महिला कांस्टेबल की डायरी, नीरजा माधव,राधा प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ. 122
5. वही, पृष्ठ. 12
6. यमदीप, डॉ नीरजा माधव, सुनील साहित्य सदन, नई दिल्ली, 2009p 146
7. वही, पृष्ठ. 197
8. चाक उपन्यास, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन, 2020, कवर पृष्ठ -02
9. यमदीप,डॉ. नीरजा माधव, पृष्ठ -177